Sociology

class- MIc-1

Topic :- Social Stratification : Meaning, Bases
सामाजिक स्तरीकरण : अर्थ, आधार (जाति, वर्ग)

किसी भी समाज में व्यक्तियों को समान स्थिती व पद प्राप्त नहीं होते। सभी समाजों की जनसंख्या अनेक सामाजिक समूहों में विभक्त होती है तथा इस विभाजन के आधार पर समाज में ऊँच-नीच का भेद भी होता था धीरे धीरे समाजों में सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ साथ जटिलता आ गई और समाज में जनसंख्या अनेक आधारों पर ऊँचे और नीचे स्तरों में बंट गई। समाज के अन्तर्गत विभिन्न समूहों के कुछ स्तरों में विभाजित होने की प्रक्रिया को ही सामाजिक स्तरीकरण कहा जाता है। वर्ग और जाति स्तरीकरण के दो प्रमुख रूप हैं।

पी० गिसबर्ट के अनुसार " सामाजिक स्तरीकरण समाज का उन स्थायी समूहों अथवा श्रेणीयों में विभाजन है, जो कि उच्चता और अधीनता के सम्बन्धों में परस्पर सम्बद्ध होते हैं।"
रेमण्ड मुरे के अनुसार " स्तरीकरण समाज का उच्च तथा निम्न सामाजिक इकाइयों में किया गया समतल विभाजन है।"
स्पष्ट है कि सामाजिक स्तरीकरण समाज में व्यक्तियों व समूहों को कुछ ऐसे समूहों में विभाजित करता है जिससे कि समस्त इकाइयाँ उच्चता और निम्नता के क्रम में व्यवस्थित हो जायें।

सामाजिक स्तरीकरण के प्रमुख आधार :-

1. प्राणीशास्त्रीय आधार (Biological Bases)
2. आयु पर आधारित स्तरीकरण (Stratification based on Age)
3. प्रजाति के आधार पर स्तरीकरण (Stratification based on Race)
4. जन्म के आधार पर स्तरीकरण (Stratification based of birth)

(i) Social cultur base सामाजिक सांस्कृतिक आधार
(ii) Economic Basis (आर्थिक आधार
(iii) Political Bases (राजनीतिक आधार)
(iv) धार्मिक आधार (Religious Basis)

by - Dr. Sangeeta Prakash

Scanned with CamScanner